18 / 04 / 84 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

समेटने की शक्ति द्वारा विस्तार को सार में लाने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा परमपिता परमात्मा की याद में बैठी हूं...

➳ _ ➳ जैसा वो है वैसा ही मेरा रूपरंग...

→ वो भी बिंदी, मैं भी बिंदी...

→ वो भी निराकार, मैं आत्मा भी...

→ मेरी पुकार पर वो हाज़िर हुआ है...

→ इस पतित दुनिया, पतित शरीर में...

■ अब मेरा पिता मुझे वापस घर ले जाने आया है...

➳ _ ➳ मुझे पावन बन पावन दुनिया में जाना है...

→ देखती हूँ अपने विस्तार को कहां कहां पर, कहां कहां तक है...

→ शरीर की प्रवर्ति में...

→ लौकिक, अलौकिक में...

→ अपनी कमी कमजोरियों में...

■ इस सारे विस्तार को सार में लाना है...

➢➢ न्यारा बनने का अभ्यास...

➳ _ ➳ मैं मेरे पन की रस्सियों को काटना...

→ मेरा घर, मेरा सेन्टर, मेरी सेवा...

→ सब उसके हवाले कर रही हूं...

→ न्यारेपन में रह सेवा कर रही हूं...

→ कमजोर संकल्प भी मेरे नही हैं...

■ सुंदर, चमकीली सब रस्सियों को काट स्वयं को मुक्त कर रही हूं...

■ मेरा मुक्तिदाता मेरे सामने है, मेरा इंतजार कर रहा है...

➳ _ ➳ अब उससे और दूर नही रह सकती...

→ बाबा से गुण और शक्तियां ले आगे बढ़ रही हूं...

→ समेटने की शक्ति द्वारा खुद के विस्तार को समेट रही हूं...

→ अब सेवा में भी क्वांटिटी की बजाय क़्वालिटी की तरफ ध्यान दे रही हूं...

→ विधि के साथ सिद्धि स्वरूप बनने और बनाने पर अटेन्शन दे रही हूं...

■ सेवाधारी से सर्वशक्तिधारी बन अन्य आत्माओं को भी सम्पन्न बना रही हूं...

➢➢ अनुभवों के खजानो से सम्पन्न आत्मा...

➳ _ ➳ बाबा से प्राप्त शक्तियो द्वारा सेवा...

→ तन, मन, धन की शक्ति...

→ समय की शक्ति...

→ सहयोग की शक्ति...

→ सबको समर्थ कार्य में लगा रही हूं...

→ हर आत्मा प्रति दान दे रही हूं...

■ अनुभवी मूर्त बन औरों को भी अनुभवी बना रही हूं...

➳ _ ➳ हर आत्मा इस कल्प वृक्ष का श्रृंगार है...

→ प्रत्यक्ष फल समान है...

→ उन्हें उमंग उत्साह द्वारा रूहे गुलाब बना रही हूं...

→ एक एक आत्मा महावीर बन अपने संस्कारों पर विजय प्राप्त कर रही है...

→ बापदादा के अलग अलग रूहानी गुलदस्ते तैयार हो गए हैं...

- सब आत्मायें सम्पन्न बनती जा रही हैं...
- अंतिम समय के लिए एवर रेडी होती जा रही है...
- मैं भी बाप समान सेवा से न्यारी...
- बाराती बन कर नही बाप के संग जाने वाली प्यारी आत्मा बन गई हूं।